Vol. 04, Issue 02, April - June 2022
ISSN (Online) No. 2582–046X Impact Factor SJIF 2020 : 3.974, Research bib 2021 : 5.21
"Ansh - Journal of History" A Peer Reviewed International Refereed Online Journal
View More Info... www.ansh.ichrc.co.in Email : ansh.history@gmail.com

भौगोलिक पर्यावरण में मानव जीवन की रचना : पश्चिमी राजस्थान में राईका समुदाय का जीवन व संस्कृति

Jeevaram Devasi;
Headmaster; Govt. Upper Primary School, Khan Varman (Shirohi - Rajsthan)
Ph.D. Research Scholar, Maharaja Surajmal Brij University, Rajasthan
Email : jrdewasi@54gnail.com

Abstract:

भौगोलिक वातावरण में मानव जीवन के निर्माण के अध्ययन में राज्य के रायका समुदाय में पशुपालन की प्रवृत्ति के दृष्टिकोण से विश्व के मानव जीवन की उत्पत्ति और संस्कृति को तर्कसंगत रूप से समझना नितांत आवश्यक है। प्रस्तुत शोध में मरुस्थलीय क्षेत्र में बसे राइका समुदाय पशुपालन व्यवसाय का पता है, इसलिए राजस्थान के राइकाओं की अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान है। जब बात पशुपालन की आती है तो हमारे दिमाग में लाठी, अंगरखा और धोती लिए, चमड़े के जूते पहने, ऊंटों और भेड़ों का झुंड लेकर चलने वाले व्यक्ति की तस्वीर उभरती है। सांस्कृतिक पहचान बनाए रखना मुख्य रूप से भेड़ पालन और ऊंट पालन रायका राजस्थान और गोंडवाड़ क्षेत्रों में केंद्रित है।

मरुस्थल की विकट परिस्थितियों ने उनके पहनावे, खान-पान और रहन-सहन पर काफी प्रभाव डाला है, इन विकट परिस्थितियों ने उन्हें मौसमी प्रवास के लिए भी प्रेरित किया है। ऊंट और भेड़ पालन उनकी आजीविका का मूल साधन है। प्रस्तुत शोध में, पश्चिमी राजस्थान में राइका समुदाय का जीवन और संस्कृति: एक भौगोलिक अध्ययन जिसमें रायका समुदाय के जीवन का पारंपरिक तरीका, समुदाय पर भौतिक सांस्कृतिक प्रभाव, मौसमी प्रवास, जीवन और संस्कृति में परिवर्तन के विभिन्न आयाम विस्तार से विश्लेषण किया गया है।

Key Words: **राईका, समुदाय का जीवन व संस्कृति, रायका समुदाय में पशुपालन**

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

ऐतिहासिक दृष्टिकोण से रायका पश्चिमी राजस्थान में वर्तमान में सबसे बड़े चरवाहा समुदाय हैं (अग्रवाल, 1993)। यह समुदाय वर्तमान में अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान रखते हैं। इस विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान के पीछे उनका अपना इतिहास भी है। हालांकि रायका समुदाय का कोई लिखित इतिहास अभी तक जानकारी में नहीं हैं, या उपलब्ध ही नहीं हैं, बावजूद इसके, रावों, भाटों की पोथियों, दन्तकथाओं एवं प्रचलित मान्यताओं के अनुसार रायका के इतिहास को जानने का प्रयत्न किया है। रायका समुदाय के व्यक्तियों एवं रावों ने साक्षात्कार में बताया कि वे अपनी उत्पत्ति भगवान शिव व माता पार्वती से मानते हैं।

"पैली पार्वती सांड़ पैदास किनी,
एक दिवस महादेवजी ग्वाल वणीया, पसीनो आयो।
सोबड़ा (चमड़ी) रो मेल उतारियो, तन–मेल रो पूतलो वणायों,
पुरूष पैदा किनो, पुरूष नाम जगो सामड़ देरायो।[1]

Vol. 04, Issue 02, April - June 2022
ISSN (Online) No. 2582–046X Impact Factor SJIF 2020 : 3.974, Research bib 2021 : 5.21
"Ansh - Journal of History" A Peer Reviewed International Refereed Online Journal
View More Info... www.ansh.ichrc.co.in Email : ansh.history@gmail.com
E-JOURNAL (HISTORY) SINCE 2019 E - ISSN : 2582-046X

रायका नामकरण

प्राप्त लिखित तथ्यों के आधार पर यह माना जाता हैं कि रावों की पोथी एवं मान्यताओं के अनुसार 'रायका' एक उपाधि है, जो इनको राजाओं के विश्वास–पात्र होने के कारण मिली। इस उपाधि के पीछे की मान्यता महाभारत काल से सम्बन्धित है। मान्यतानुसार कुरूक्षेत्र में महाभारत के समय युधिष्ठिर ने यह आदेश दिया कि विराटनगर से सेना को लाना है, लेकिन एक रात में कैसे लाया जाए? इसको लेकर चिन्तित थे, तब इस चरवाहा समुदाय, जो अपने घुमक्कड़ जीवन के कारण सारे रास्ते जानता था, ने यह बीड़ा उठाया एवं एक रात में अपने क्षेत्रीय ज्ञान से लघुतम दूरी वाले रास्तों से सेना को कुरूक्षेत्र पहुँचाया। उस वक्त युधिष्ठिर ने इनको 'रायका' की उपाधि प्रदान की, तब से रायका कहलाए। ऐसी मान्यता है।[2]

जहाँ तक रायका समुदाय के सम्बन्ध में पाये गये तथ्यों का प्रश्न हैं तो यह माना जाता हैं कि यह समुदाय के लिए 'रेबारी' शब्द भी प्रयुक्त होता है। रेबारी या रबारी शब्द फारसी शब्द 'रेहबर' शब्द के सर्वाधिक निकटतम जान पड़ता है। 'रेहबर' शब्द का हिन्दी में समानार्थी 'मार्गदर्शक' शब्द है।[3] प्राचीनकाल से ही यह समुदाय पशुचारण के लिए विभिन्न एवं दूर–दराज के क्षेत्रों में जाता रहा है। अतः यह समुदाय विभिन्न क्षेत्रों का एवं वहां पर जाने वाले मार्गों का ज्ञान रखता था एवं अन्य यात्रियों एवं लोगों के लिए मार्गदर्शक का कार्य करता रहा होगा। अतः इस प्रकार यह समुदाय रेहबर, रैहबरी या रेबारी कहा जाने लगा होगा ऐसा प्रथम दृष्टया जान पड़ता है।

देववासी या देवासी :

यह समुदाय प्रकृति पर पूर्ण रूप से निर्भर रहा है एवं प्रकृति के साथ सामन्जस्य से जीवन–यापन से यह समुदाय अत्यन्त भोलापन एवं देवगुणी होता है, जिससे इनको देववासी या देवासी भी कहा जाने लगा।[4] इनके अलावा इनको मालधारी, भड़वाड़, धनगढ़, गड़रिया, हिरावंशी, देसाई आदि नामों से जाना जाता है।

वीसोहत्तर उत्पत्ति

रायका समुदाय वर्तमान में दो समूहों में विभाजित हैं – मारू रायका एवं गोड़वार (रालेफॉसन एवं राठौड़, 2004)। रावों की पोथी के अनुसार वर्तमान में रायका समुदाय की कुल 133 गोत्र निश्चित है, जिसे वीसोहतर कहा जाता है। वीसोहतर के मायने 20+100+13 = 133 हैं।[5]

"शिव सगति उपायो, निरमल बांधी न्यात।
वीसोतर वरीआतरी, जा लग बांधी जात।।"[6]

अर्थात् शिव–शक्ति से उत्पन्न यह निर्मल समाज, वरीआतरी एवं जंगा सामड़ का यह वंश वीसोत्तर (133) गोत्रों में आबद्ध है।

Vol. 04, Issue 02, April - June 2022
ISSN (Online) No. 2582–046X Impact Factor SJIF 2020 : 3.974, Research bib 2021 : 5.21
"Ansh - Journal of History" A Peer Reviewed International Refereed Online Journal
View More Info... www.ansh.ichrc.co.in Email : ansh.history@gmail.com
E-JOURNAL (HISTORY) SINCE 2019 E - ISSN : 2582-046X

रायका आवासित मानव अधिवासों का भौगोलिक वितरण

अधिकांश रायका जो कृषि कार्यों में संलग्न रहे उनका स्थायीकरण तेजी से हुआ, परन्तु पशुपालनकर्ताओं का स्थायीकरण नहीं हुआ, क्योंकि कृषि भूमि से उनके पशुओं को मिलने वाला चारा अपर्याप्त था, अतः वे लोग घुमक्कड़ ही रहे। रायका समुदाय भी एक प्रमुख चरवाहा होने के कारण वे लोग भी घुमक्कड़ रहे एवं वर्तमान में भी अपने पशुओं के चारा–पानी के लिए ऋतु प्रवास या दीर्घावधि प्रवास करते हैं।[7] इस प्रकार ये दो प्रकार के अधिवासों में निवास करते हैं।

स्थायी मानव निवास – ये निवास पश्चिमी राजस्थान रायका समुदाय के ग्रामीण अधिवास से सम्बन्धित है। रायका अपने समाज के साथ गांवों में रहते हैं एवं अपने सामाजिक दायित्वों के निर्वहन के लिए उन्हें एक स्थायी अधिवास की आवश्यकता भी होती है। इन अधिवासों में ये लोग जब तक निवास करते हैं जब तक की पशुओं के लिए भोजन की व्यवस्था रहे। अर्थात जब मानसून सक्रीय होता है तो यह लोग अपने स्थायी निवास स्थान पर रहते है तथा यही कारण है कि अधिकतर सामाजिक कार्य वर्षाकाल के दौरान ही करते है।

अस्थायी पशुओं का डेरा – सर्वेक्षण के अन्तर्गत यह पाया गया है कि यह निवास उनके प्रवास के दौरान बनाए गये अल्पकालीन आवास से है। रायका अपने साथ भेडे, अपने परिवार व परिवार हेतु न्यूनतम आवश्यक वस्तुओं के साथ प्रवास करते है। ये सब डेरा कहलाते है एवं जहां डेरा डाला जाता है वहां पर उनका अस्थायी निवास बनाया जाता है वे अपने डेरे को ऊंटों या गधों पर लादकर एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाते है। राड़का समुदाय प्रवास के दौरान 4 से 5 डेरे एक साथ लेकर चलते है। वहां के खेत के मालिक के कहने पर खेत में डेरा डालते है इनके पशुधन उस खेत में बैठकर गोबर करता (मिंगणी) जो खेतों में खाद का काम करती है एवं बदले में खेत का मालिक इनको खाने–पीने की वस्तुएं, गेहू या पैसे देता है।

सांस्कृतिक परिवेश – किसी भी प्रदेश की संस्कृति वहां पर विद्यमान भौगोलिक दशाओं के प्रभावों को इंगित करती है। शुष्क एवं अर्द्धशुष्क प्रदेश में वहां पर विद्यमान भौगोलिक दशाएं वहां की संस्कृति को प्रभावित किया है। रायका (रेबारी) समुदाय इसी प्रदेश में निवास करता है तथा उसने अपना एक परिवेश का निर्माण किया है। रायका समुदाय ने जिस जगह परप अपना आवास स्थापित किया है वहां पर एक विशेष परिवेश का निर्माण किया है। उसने अपने अधिवास के आस–पास अपने पशुओं के लिए बाडे, छोटे जानवरों के लिए घर में अलग से स्थान, घरों का निर्माण, आवास का निर्माण गांवों को बाहर की ओर करना, पशुओं को चराने के लिए पगडंडियां अपने लोक देवताओं के लिए देवरे (मन्दिर) उनके ओरण आदि का निर्माण करना।[8]

सांस्कृतिक परिवेश में मुख्य रूप से रायका समाज द्वारा निर्मित संस्कृति भू–दृश्य एवं उसकी सामाजिक–आर्थिक गतिविधियों के केन्द्रो पर निर्माण से है। पशुपालन, सामाजिक, दायित्वों के निर्माण से है। पशुपालन, सामाजिक दायित्वों के निर्वहन, आजीविका के स्रोतों एवं सामाजिक सांस्कृतिक गतिविधियों के कारण

Vol. 04, Issue 02, April - June 2022
ISSN (Online) No. 2582–046X Impact Factor SJIF 2020 : 3.974, Research bib 2021 : 5.21
"Ansh - Journal of History" A Peer Reviewed International Refereed Online Journal
View More Info... www.ansh.ichrc.co.in Email : ansh.history@gmail.com
E-JOURNAL (HISTORY) SINCE 2019 E - ISSN : 2582-046X

भिन्न प्रकार के परिवेश का निर्माण होता है। रायका समाज के स्थायी अधिवासों एवं अस्थायी अधिवासों में सांस्कृतिक परिवेश भी भिन्न है।

स्थायी अधिवासों में सांस्कृतिक परिवेश

सामान्यतः यह समुदाय जिन ग्रामीण क्षेत्रों में स्थायी निवास बनाकर रहता है वहां पर अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान अपने व्यवसाय एवं दैनिक कार्यशैली से एक विशिष्ट परिवेश का निर्माण करता है।[9]

1. **पूजा स्थल** – धार्मिक दृष्टिकोण से रायका समुदाय जिन स्थानों पर रहता है उसके आस–पास में एक सामूहिक पूजा स्थल होते है। मुख्य रूप से ये पूजा स्थल ''उज्जैनी वीर मामाजी, महादेव जी के होते है। उज्जैनी वीर मामाजी के भोपे भी रायका समुदाय के ही लोग होते है। अपने घरों में ही छोटा सा पूजा स्थल होता है। जिसमें सभी देवी देवताओं की तस्वीरें होती है।

2. **बाडे** – रायका समुदाय पशुपालक एवं चरवाहा होने के कारण ये पशुओं के निवास हेतु अपने घर के परकोटे में या घर से थोडा दूर बाडे बनाते है। बाडों की बाड ऊंची होती है क्योकि ये प्रतिदिन पशुओं के लिए पेडों की टहनिया काटकर लाते है वो पशुओं के खाने के बाद बाड पर डाल देते है।

3. मींगणी के डेर (उक्ल्ली/गोदी) : रायका समुदाय जिन स्थानों पर निवास करते उसके आस–पास मींगणी के ढेर या उकल्ली मिलना लाजिमी है। भेड व बकरियों के गोबर को मींगणी कहा जाता है।

4. **ऊन तैयार करना** – समुदाय के लोग प्रायः ढेरी से ऊन कातना, अपने पशुओं से प्राप्त ऊन की पतली डोरी बनाते जाते है एवं उसको ढेरी पर लपेटते जाते है। ढेरी दो छोटी–छोटी डंडीयों को एक दूसरे के बीच में बांधकर बनाई जाती है यह दृश्य भी रायका समुदाय के निवासित क्षेत्रों मे ही देखने को मिलता है।

उपर्युक्त परिवेश रायका समुदाय निवासियों क्षेत्रों में ही देखने को मिलता है। रायका समुदाय अपनी आर्थिक, पारिवारिक गतिविधियों से अपना एक अलग सांस्कृतिक परिवेश का निर्माण करते है। पर्यवेक्षण में पाया गया कि परिवेश वर्तमान में आधुनिता के प्रभाव में कम होता जा रहा है।

डेरों में सांस्कृतिक परिवेश – सामान्यतया इसका समुदाय के लोग जब अपने रैवड के साथ प्रवास करते है तो अपने प्रवास मार्ग पर जहां डेरा डालते है वहां पर अलग सांस्कृतिक परिवेश बनाते है। डेरे वस्तुतः न्यूनतम आवश्यकता वाले समान से है जो वे अपने साथ लेकर चलते है जिसमे खाने–पीने, कपडे बर्तन आदि होते है। ये लोग अपने डेरे पानी के स्रोतों एवं खेतों तथा जंगलों के आस–पास डालते है। डेरों में इनकी दिनचर्या स्थायी अधिवासों की तरह ही होती है। लेकिन खुले आसमान के नीचे इनके डेरे आस–पास की बस्तियों से स्वतः ही भिन्न दिखाई देते है। खुले स्थान में ही खाना पकाना, भोजन करना, भेडों को रखना त्यौहार मनाना आदि होता है।[10]

Vol. 04, Issue 02, April - June 2022
ISSN (Online) No. 2582–046X Impact Factor SJIF 2020 : 3.974, Research bib 2021 : 5.21
"Ansh - Journal of History" A Peer Reviewed International Refereed Online Journal
View More Info... www.ansh.ichrc.co.in Email : ansh.history@gmail.com

रेबारी समुदाय डेरे मुख्य रूप से लकडी या लोहे की छड से बने चारपाईनूमा एवं लगभग 4 फीट ऊंचे मचान बनाते है जिस पर वे अपने बिस्तर, कपडे, आदि रखते है एवं इस मसान के नीचे छाया में चारपाई, छोटे बच्चों के झुले, छोटे मेमने आदि को रखा जाता है।

लोक संस्कृति एवं सांस्कृतिक परम्परा

रायका समाज की परम्परा–सिरोही का सारणेश्वर मन्दिर– यद्यपि राजा–रजवाडों का दौर तो खत्म हो गया लेकिन सिरोही में कई सदियों से एक परम्परा आज भी चली आ रही है कि जलझुलनी (देवउठनी) ग्यारस अर्थात् भाद्रवपद मास की शुक्ल पक्ष की ग्यारह के दिन सिरोही राजघराना अपना राजपाठ दो दिन के लिए रायका (रेबारी) जाति के लोगों को सौप देते है।[11]

सिरोही में सारणेश्वर मन्दिर पर एक दिन के लिए रायका समुदाय का आधिपत्य की गाथा वीरता और श्रद्धा से भरी हुई है। ऐतिहासिक मतो के अनुसार 1298 ई में दिल्ली के सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी ने सिद्धपुर के सोलंकी राजवंश को नेस्तनाबूत करके वहाँ पर रूदमाल मन्दिर के शिवलिंग को उखाड़ लिया एवं हाथी के पांव में जंजीरों से बांधकर घसीटता हुआ दिल्ली की ओर बढ़ गया।[12]

ऐसी मान्यता है कि अलाउद्दीन खिलजी अपनी सेना के साथ सिरणवा पहाड़ियों के पास पहुंचा तो महाराव विजयसिंह को कान्हड़देव के पुत्र वीरमदेव और उनकी सेना तथा मेवाड़ की सेना की मदद मिल गई। इन तीनों सेनाओं ने अलाउद्दीन खिलजी को परास्त करके दीपावली के दिन शुक्ल कुण्ड के सामने रूद्रमाल के शिवलिंग की स्थापना की।

ऐतिहासिक दृष्टिकोण से ऐसे भी तथ्य उपलब्ध है कि इस युद्ध में दुश्मन को नुकसान हुआ इसलिए इस मन्दिर का नाम क्षरणेश्वर महादेव रखा, जो बाद में अपभ्रंश होकर सारणेश्वर महादेव के रूप में विख्यात हुआ। अपनी हार से बौखलाये अलाउद्दीन खिलजी ने पुनः 1299 ई. में फिर से सिरोही पर आक्रमण किया।[13] लेकिन, तब सिरोही की प्रजा ने यहाँ के महाराव का साथ देकर सारणेश्वर के शिवलिंग को बचाने की प्रतिज्ञा की। आम्बेश्वर और सारणेश्वर के बीच की पहाड़ियों से रायका (रेबारी) समुदाय ने गोपणों से अलाउद्दीन खिलजी की सेना पर आक्रमण करके उनके पैर उखाड़ दिए। दिल्ली लुस्तान की सेना गोपणों का सामना नहीं कर पाई।

प्राप्त तथ्यों के आधार पर देवझूलनी एकादशी के दिन ही रायका (रैबारियों) ने सुल्तान की सेना को हराया था, इसलिए सिरोही महाराव ने एक रात के लिए सारणेश्वर मन्दिर को पूरी तरह से रेबारी समुदाय को सौंप दिया। उस दिन केवल रेबारी और वो भी अपने पारम्परिक पोशाक में ही मेले में जा सकते है। उस दिन मेले में जाने वालों को भी रैबारी रबारियों की पोशाक पहननी पड़ती है, अन्यथा वो भी नहीं आ सकते।

Vol. 04, Issue 02, April - June 2022
ISSN (Online) No. 2582–046X Impact Factor SJIF 2020 : 3.974, Research bib 2021 : 5.21
"Ansh - Journal of History" A Peer Reviewed International Refereed Online Journal
View More Info... www.ansh.ichrc.co.in Email : ansh.history@gmail.com

सर्वेक्षण में यह पाया गया कि रायका समाज के लोग जिन्हें परम्परा के मुताबिक सिरोही के राजा ने दो दिनों का राजपाट सौंप दिया जाता हैं तब हजारों रायका जो इस अद्भूत परम्परा को निभाने के लिए देशभर से यहाँ पहुँचते हैं।

महिला और पुरूष सभी एक ही वेशभूषा और पोषाक में दिखाई देते हैं। सदियों से यह परम्परा निभाई जा रही है, सिरोही राजघराने में राजमहल में यहां इनका अब कोई शासन तो नहीं लेकिन सदियों से चली आ रही परम्परा के मुताबिक दो दिन के लिए राजपाट रायका (रेबारी) जाति के लोगों को सौंपा जाता है।[14] सिरोही में रायका समुदाय के लोग एक ही पोशाक में इतनी बड़ी संख्या में यहां इकट्ठा होते हैं एवं यह परम्परा अनवरत निभाई जा रही है।

सांस्कृतिक स्वरूप

रायका समुदाय अपनी परम्परागत चलवासी पशुपालन की संस्कृति का निर्माण एवं वाहक है। अपने पहनावे, आभूषण, खान–पान, रहन–सहन, आर्थिक–गतिविधियों, सामाजिक संरचना के कारण रायक समुदाय अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान कायम की है। शोध अध्ययन में पर्यवेक्षण एवं साक्षात्कार के द्वारा समुदाय के सांस्कृतिक जीवन को रेखांकित करने का प्रयास किया गया है। जिसका विवरण अधोलिखित प्रस्तुत है –

1. **रायका पुरूष का पहनावा व आभूषण** : रायका समुदाय में पहनावा के अन्तर्गत विभिन्न श्रेणियों में पोशाकों को दर्शाया गया है। शोध अध्ययन में पाया गया कि सामान्य, त्यौहार एवं शादी–विवाह के अवसरों पर पोशाकें स्त्री/पुरूष को अलग–अलग रूप से दृष्टिगत होती है। यह सर्वमान्य तथ्य है कि रायका एक घुमन्तु जाति होने से जलवायु के दृष्टिकोण से उनकी पोशाकों एवं पहनावा पर प्रतिच्छाया स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। पुरूषों की पोशाक प्रतिदिन एक स्थान से दूसरे स्थान पर विहार करते की रहती है। अतः कृषि कार्य में परिवार के सीमित व्यक्ति ही रहते है। उस शरीर पर अंगरखी, धोती तथा सिर पर साफा अत्यधिक तापमान से बचने के लिए धवन वस्त्र ही प्रचलन में है और हाथ में लाठी इनकी पहचान है।[15] अध्ययन में यह पाया गया कि जो वृद्ध व्यक्ति या वरिष्ठ सदस्य डेरे के साथ सफेद साफे में तथा अन्य सहकर्मी, अलग सह–चालक लाल साफे में रहते हैं, चलते हुए सुरक्षा के दृष्टिकोण से तथा पशुओं को हांकने या आगे बढ़ाने एवं नियंत्रित करने के लिए एक मजबूत बांस की लकड़ी रखते हैं, उस लकड़ी को जगह–जगह से तार से बांध दिये होते हैं तेल रगड़कर उसको मजबूत किया जाता हैं जो उनकी पोशाक का अविभाज्य अंग है। रायका है तो अंगरखी, साफा, धोती, घुटनों तक और हाथ में लाठी है। यह पोशाक रायका को अन्य जाति के व्यक्ति एवं नागरिकों से अलग पहचान देती है। यह भी पाया गया कि चेहरे पर दाढ़ी एवं मूंछ रखी जाती है, यद्यपि युवाओं में मूंछों का प्रचलन है साथ मजबूत चमड़े की पगरखी तथा कमर में चमड़े की गोफण एवं काले धागे में कुछ मोती–कोड़ी पिरोयो हुए करधनी भी दृष्टिगत होती है। पैर में चमड़े व कडला तथा गले में कहीं कहीं ताम्बे की खुंगाली तथा कान में मुरकियाँ (बालियां) देखी जाती है।[16]

Vol. 04, Issue 02, April - June 2022
ISSN (Online) No. 2582–046X Impact Factor SJIF 2020 : 3.974, Research bib 2021 : 5.21
"Ansh - Journal of History" A Peer Reviewed International Refereed Online Journal
View More Info... www.ansh.ichrc.co.in Email : ansh.history@gmail.com

2. **रायका महिलाओं की पोशाक व आभूषण** : माँ, बेटी, बहू साथ–साथ रहते, सोते, बैठते चलते दिखाई देते है। लेकिन पोशाक एवं पहनावे भी उम्र के अनुसार स्पष्ट अन्तर दिखाई देता है। [17]

3. **विवाहित महिलाओं की पोशाक व आभूषण** : परिवार में सबसे वरिष्ठ महिला जिसमें वात्सल्य भाव की प्रतिमूर्ति होने से सबसे सम्मानजनक पद का रूप लिए होती है। माँ यदि सुहागन है तो वह सिर पर लाल–पिली–चुन्दडी की तरह तथा साड़ी की बोर्डर पर बैंगनी तथा काली रंग की छवि देखी जाती है। इन महिलाओं की सिर के बाल, गुंथे हुए रहते है जिससे काफी लम्बे समय तक बालों को सुरक्षित रखा जा सकता है, जिससे 'बथला' कहते है। कानों में झेला, टोटिया, गले में खुंगाली (सोने के हार), सोना बहुत कम पहनते हैं। हाथों में हाथी दांत का चूड़ा, हाथ के कोहनी से भूजा तक एंव कलाई पर चूड़िया पहनती है। विवाहित महिलाएं ही चूड़ा पहनती है। एक विशिष्ट पहचान देती है। वृद्ध महिलाएं, सामान्य रूप से पोमचा पहने होती है तथा ओढ़नी के साथ उसी रंग से मिलता–जुलता गहरे काले व बैंगनी रंग का घाघरा पहना जाता है जिसमें 40 से अधिक कलिया होती है जिस फेटिया कहते है। पैर में मजबूत चोड़ी कड़िया होती है। विशेष समारोह व त्यौहारों में इसी प्रकार के वस्त्रों को नये और जिस पर कोर–पति के फूल खिले हुए गोटा–कोर से निर्मित होती है। यह गोल्डन व सिल्वर कलर की भी होती है। प्रवास के दौरान महिलाएं बहुत कम आभूषण पहनती है, लेकिन विशेष अवसरों पर सिर में मेमद, बोर, कानों में 'झेला', नाक में नथ, वाली, हाथ में चूड़ियों व चूड़ा, कमर पर 'कणदारो', पैरों में कड़िया व सड़ा (पायल) पहनती है।

4. **रायक समुदाय भाषा एवं बोलियाँ** : रायका ने अपने आपको विभिन्न क्षेत्रों में घूमते हुए भी बोलियों में अभी–भी अपने साथ अपने भाव अभिव्यक्त से जोड़ रखा है। रायक मुख्य रूप से पश्चिमी राजस्थान में बोली जाने वाली मारवाड़ी बोली से संप्रेषण करते है। सिरोही समुदाय के रायका गोड़वाड़ी बोली बोलते हैं एवं उनकी भाषा पर गुजराती बोली का सूक्ष्म प्रभाव दिखता है।[18] उनका मानना यह है कि हमारी अपनली बोली से हम अपनी बात को आसानी से समझा सकते है समझ सकते है। अन्य क्षेत्रों में जाने पर सांकेतिक भाषा के प्रयोग से सुरक्षा होती है।

निष्कर्षत

प्रस्तुत अध्याय में ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में रायका की परम्परागत शैली का विवरण प्रस्तुत किया गया है। मरूस्थलीय क्षेत्रों में पशुचारण के लिए चरवाहे के रूप में इनकी एक पहचान बनी हुई है और राजस्थान में पश्चिमी थार मरूस्थलीय प्रदेश में जलवायु दशाओं की प्रतिकूल परिस्थितियों के कारण अरावली की पहाड़ियों के पूर्वी भाग की ओर प्रतिवर्ष मिलों चलकर अपने पशुओं का पशुचारण के लिए सौ से हजार भेड़े, ऊँट, बकरियाँ, गाय, गधे आदि को एक समूह के रूप में 10 से 15 परिवरा मिल कर रैवड़ के रूप में प्रतिदिन औसत 30 से 40 किमी की दूरी तय कर लेते हैं। जहाँ खुला स्थान, जलस्रोत, पशुओं के बैठने की पर्याप्त जगह देखकर ये रात्रि में अपना डेरा डाल देते है और लगभग एक सप्ताह चलने के बाद किसी ऐसे अनुकूल स्थान को देखकर

Vol. 04, Issue 02, April - June 2022
ISSN (Online) No. 2582–046X Impact Factor SJIF 2020 : 3.974, Research bib 2021 : 5.21
"Ansh - Journal of History" A Peer Reviewed International Refereed Online Journal
View More Info... www.ansh.ichrc.co.in Email : ansh.history@gmail.com
E-JOURNAL (HISTORY) SINCE 2019 E - ISSN : 2582-046X

डेरे को दो–तीन दिन के लिए रूक जाते है। जहां स्थानीय लोग उनको अपने खेतों में डेरा डलवाते हैं जिनसे उनको खाद प्राप्त होती है। रायका अपने स्थानीय जिले सिरोही में लगभग 49 बस्तियों अपनी में रायका ने आवास बना रखे हैं। अपनी युवा–पीढ़ी में पढ़ने–लिखने का प्रचलन, आधुनिकता की झलक, देखने को मिल रही है।

जहां तक सांस्कृतिक परिवेश के विश्लेषण का प्रश्न है उनके भी परम्परागत शैली की झलक आज भी दिखाई देती है। उनके पहनावे, भोजन व सामाजिक रीति–रिवाजों में अनोखा व विचित्र स्वरूप देखने को मिलता है। रायका की महिलाओं व पुरूषों में जो पहनावा दिखाई देते हैं वह उनकी अलग पहचान देता है जिसका उल्लेख अध्याय में किया गया है। इसी प्रकार उनके रीति–रिवाज व लोक संस्कृति ही परम्पराएं आज भी रायका को अलग पहचान देती है।

संदर्भ ग्रंथ

1 *रावों का चौपड़ा, अरविन्द राव, बीजापुर*
2 *Bhatt, S.C. (1997) : The Enclyclopedia : District Gazetters of India, Vol. 4, Northern Zone, Gyan Publishing House, New Delhi.*
3 *Ghosh, B.N. (1985) : Fundamental of Population Geography, Sterling Publisher Pvt. Ltd. New Delhi.*
4 *Shama, Dashrath (1996) : Rajasthan - Through the ages from the earlist times to 1316 A.D., Rajasthan State Archives, Bikaner*
5 *Trewartha, G.T. (1969) : A Geography of Population, World pattern pergamon press, Jhon willey and sons.*
6 *रावों की पोथी*
7 *Brunches, J.L.a. (1947) : Geographi Humanie, Paric 1910. Translated as Human Geography, Last edition Published in London.*
8 *Finch, V.C. and G.T. Trewartha, et al., Elements of Geography : Physical and Cultural McGraw Hill, New York, 4th Edition.*
9 *Tod, J. (1947), Annais and Antiquities of Rajasthan, Vol. 111, Pp. 7*
10 *Ojha, G.H. (1928). Mewar Rajya-Ka-Itihas, p. 121, Vedic Yantralaya, Ajmer (Hindi)*
11 *The office of the Deputy Director General, Geological Survey of India, Western Region, Jaipur*
12 *Hydrogeological Atias of Rajastha, Sirohi District, Ground Water Department, Rajasthan*
13 *District Census Handbook, Sirohi, Village & Townwise, PCA, Census of India, 2001, Directorate of Census Operations, Rajasthan.*
14 *District Survey Report, Department of Mines and Geology, Sirohi*
15 *Trewartha, G.T. An introduction to climate, McGraw Hill Book, New York, 1954*
16 *Census of India, 2011-Primary Census Abstract Rajasthan, Series-19. Directorate of Census Operations, Rajasthan.*
17 *देसाई, भीमाभाई, लल्लुभाई (1927), वैहान कुल कल्पद्रम, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर*
18 *पनगड़िया बी.एल. (2015), राजस्थान का स्वतंत्रता संग्राम, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर*